हलचल

बाल पत्रिका

अंक–2, सितंबर–अक्टूबर, 09

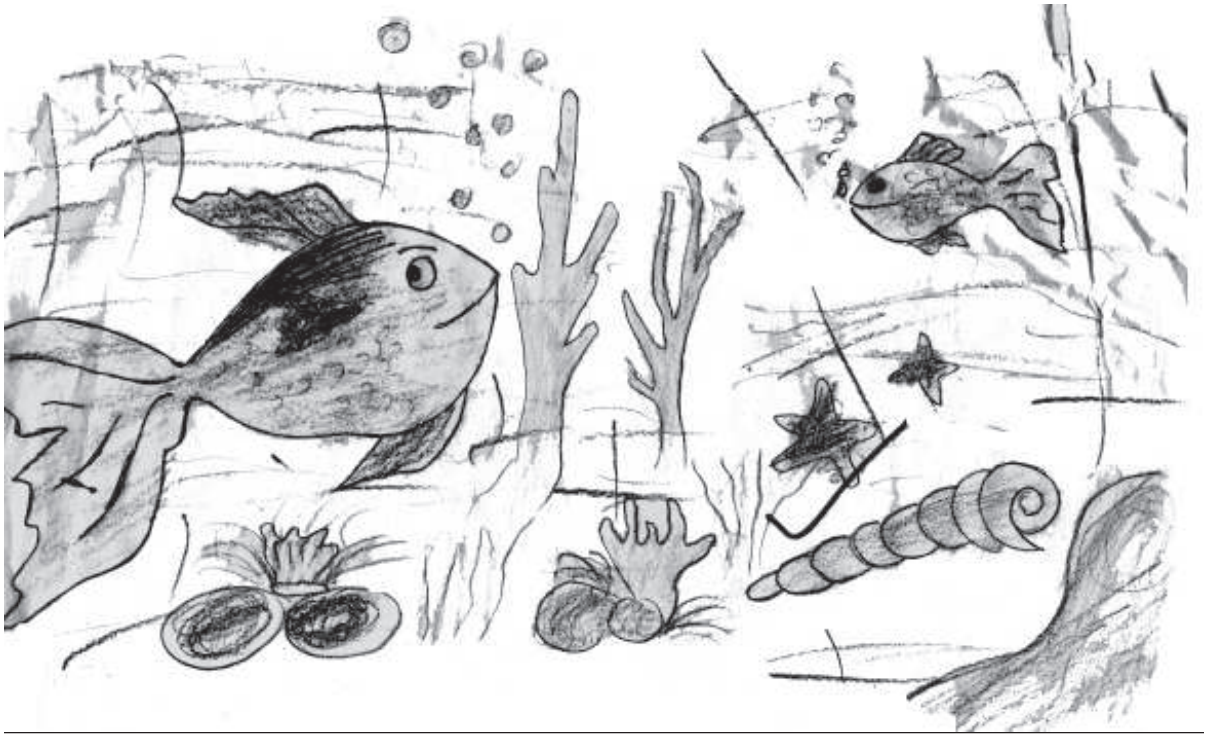

हमारे काम के बारे में.....

एक पत्थर की भी तकदीर बदल सकती है
शर्त ये है कि सलीके से संवारा जाये।

किसी शायर की लिखी हुई ये लाईनें जीवोदय जैसे समूह पर सटीक बैठती हैं। वे बच्चे जिनको समाज ने पहले ही नकार दिया हो उनको संवारना एवं उनके बेहतर जीवन के लिये प्रयास करना जीवोदय के काम का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। जीवोदय उन बच्चों के लिये काम करता है जो विभिन्न कारणों से भागकर जीवन जी रहे हैं। रेलवे प्लेटफॉर्म ही इनका घर है। यहां रहकर वे अपना जीवन यापन करते हैं। संस्था की शुरुआत सन् 2001 में इटारसी के रेलवे प्लेटफॉर्म से हुई थी। मध्यप्रदेश के दो शहर इटारसी एवं जबलपुर में कार्यरत् है। जब इस काम की शुरुआत हुई तो संस्था के साथियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। उसका कारण शायद ये हो सकता है कि इस इलाके में ऐसे बच्चों के विकास के लिये काम करने की ये एक नयह अवधारणा थी। समुदाय के लोगों को इसके प्रति संवेदनशील बनाने में एवं इस तरह के बच्चों के मनोविज्ञान की समझ बनाने में संस्था के साथियों को कुछ समय लगाना पड़ा। लेकिन आज स्थिति बिलकुल फरक है। आज लोग इस काम को काफी सकारात्मक नजरिये से देखते हैं।

जीवोदय के साथी मानते हैं कि जो बच्चे बहुत अव्यवस्थित जिंदगी जी रहे हैं उन्हें भी बेहतर जिंदगी मिलनी चाहिये। यही सोचकर कुछ साथियों ने संस्था की बुनियाद रखी। आज ये बुनियाद मजबूत भवन के रुप में हम सबके सामने है।

संस्था ने मुख्यतः चार तरह के काम अपने हाथ में लिये हैं। जो इस प्रकार हैं-

समयोग :

जीवोदय की ये एक ऐसी परियोजना है जिसमें हर दिन लगभग ३५ बच्चे आते हैं। यहां बच्चों को रहने की व्यवस्था होती है। ये परियोजना संस्था के इटारसी केन्द्र में काम करती है।

हलचल

बाल पत्रिका
अंक-2 सितंबर-अक्टूबर,09

इस अंक में.....

चिट्ठी	२
लड्डू पेड़ा दो थे भाई	३
पिताजी सेब लाना	४-५
मेरी उलझन	६
सोचो और विचार करो	७
कुछ बातें मेरे बारे में	८-९
कुछ याद आया	१०
कहानी कुछ ऐसे बनी	११
दो दोस्तों की बातें	१२
	१३
क्या ये सच है !	१४-१६

संपादन एवं डिजायन : ज्योति दीवान
संपादक मंडल : नाज खान, राहुल बदोनिया, विक्रम चौरे एवं सपना तिवारी
मुख्यपृष्ठ :
प्रकाशक : जीवोदय, इटारसी
मुद्रक : शांति प्रेस, होशंगाबाद

इटारसी
अगस्त-सितंबर, 09

प्रिय दोस्त,

नमस्ते,

कैसे हो तुम सब? तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है? इस समय तो बहुत सारे त्योहारों का मौसम है, है न? तुम लोग भी मौज-मस्ती कर रहे होगे। लेकिन इस सब में अपनी पढ़ाई को मत भूल जाना। आखिर वो भी तो जरुरी है, क्यों है कि नहीं?

अच्छा सुनो, इस बार हम तुमसे कुछ गंभीर बात करने जा रहे हैं। अब तुम सोच रहे होगे कि मौज-मस्ती के बीच में गंभीर बात कहां से आ गयी! लेकिन जैसे पढ़ाई जरुरी है वैसे ही हमें कुछ और तरह की बातें भी जानना जरुरी है। अब जैसे ये ही बात लो कि क्या तुम जानते हो कि तुम्हें कुछ अधिकार प्राप्त हैं, नहीं न !

एक इंसान होने के नाते जब से समाज बना तब से हमें कुछ अधिकार प्राप्त हैं जैसे रहने के लिये घर, पहनने के लिये कपड़ा और खाने के लिये भोजन। हर इंसान चाहे वो अमीर हो गरीब, लड़का हो या लड़की या फिर किसी भी जाति, धर्म आदि को हो उसे ये अधिकार मिलना चाहिए।

तुम्हारी उम्र के बच्चों को भी कुछ अधिकार मिले हैं हलचल के कुछ अंकों में हम उन्हीं अधिकारों के बारे में जानेंगे।

उम्मीद है हलचल का ये अंक तुम्हें अच्छा लगेगा।

इसी उम्मीद के साथ-

तुम्हारी दोस्त
हलचल

लड्डू पेड़ा दो थे भाई

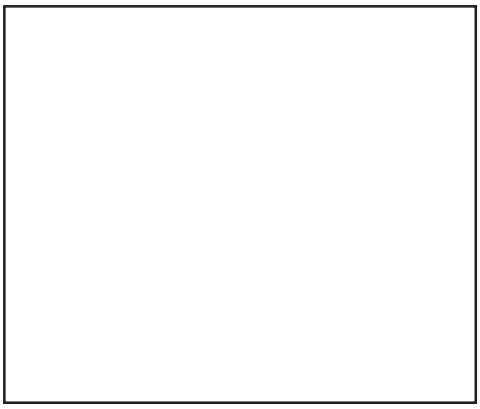

लड्डू-पेड़ा दोनों भाई
आपस में हो गई लड़ाई
लड्डू ने हाथ उठाया
पेड़े ने पत्थर सन्नाया
इतने में आ गया हलवाई
फिर उसने दोनों की
बनायी मलाई।

कविता : बुद्धुलाल, कक्षा–तीन ***(जागृति सेन्टर, जबलपुर)***

पिताजी सेब लाना

1
पिता जी मेरे लिए सेब लाना
अरे सेब
2
बेटा फल बहुत मेहगे है।
क्या मैं कोई दूसरा फल ला सकता।
3
ऊं ऊं मुझे सेब चाहिए
ठीक है बेटा
4
इतनी महगाई में सेब कैसे खरीदू
6
अब क्या कहूंगा
5
सेब क्या किलो है
120 रु K.M
7
ओह पापा आ गए सेब लाए
8
बेटा सेब नही मिले मैं तुम्हरे लिए सेब की सुन्दर फोटो लाया

मेरी उलझन

सिस्टर कहतीं बनो डॉक्टर
मैडम कहतीं बनो इंजीनियर
भैया कहते इससे अच्छा
सीखो तुम कम्प्यूटर
सर कहते बनो प्रोफेसर
दीदी कहती बनो अफसर
बनना तुम्हें कलेक्टर
प्राचार्य कहते फौज में जाकर
जंग में नाम कमाओ
डाइरेक्टर जी कहतीं
घर में जाकर कोई उद्योग लगाओ
सबकी अलग-अलग है चाहत
सबका अपना नाता
लेकिन मेरे मन की उलझन
कोई समझ न पाता।

संतोश कक्षा-पांचवीं

सोचो और विचार करो

कुछ लोग एक पेड़ के पास खड़े हैं और कुछ लोग थोड़ी दूरी पर है। पर ये कर क्या रहे हैं? चित्र को थोड़े ध्यान से देखो, समझने की कोशिश करो कि इस चित्र में क्या हो रहा है? और जो हो रहा है क्या वो सहीं है? हो सकता है कि तुममें से कुछ लोगों को लगे कि जो भी यहां हो रहा है वो गलत ह। या कुछ को ये सहीं भी लगे।

अगर ये सही है तो क्यों और गलत है तो क्यों? इसके बारे में अपनी राय लिखकर हलचल के लिये जरुर ही भेजना।

कुछ बातें : मेरे बारे में

मेरा नाम भूरेलाल है। पहले मैं ढेंकना का रहता था। मेरे पापा हैं, मेरी बहन और मेरी मां की मौत हो चुकी है। मेरे तीन भाई हैं। जब मैं छोटा था तब मुझे मेरे दोस्तों के साथ बात करना बहुत अच्छा लगता था। मेरे पापा जब मुझे अपने दोस्तों के साथ खेलते हुए देखते थे तो उन्हें बहुत गुस्सा आता था और वे मुझे मारते थे। एक बार मेरे दोस्त के साथ मस्ती कर रहा था तो मेरे दोस्त और मेरी लड़ाई हो गई थी तो मैने उसे पत्थर मार दिया था। तो उसके परिवार वाले मेरे पापा से झगड़ा करने आ गये। तो मेरे पापा ने मुझे बहुत मारा। इसके बाद में मेरे पापा ने घर बदल लिया।

एक दिन मेरी मम्मी सो रही थी अचानक तबीयतदखराब हो गई जब तक हम इलाज करवाते उनकी मौत हो गई। मां की मौत के कुछ दिनों बाद छोटी बहन की बहुत बीमारी होने से और ईलाज न होने के कारण उसकी भी मृत्यु हो गईं। अब परिवार में सिर्फ मेरे पापा और तीन भाई रहते थे। पापा अकेले होने के कारण हम तीन भाईयों को काम करने के लिये भेज देते थे।

एक दिन मेरे पापा ने मुझे मारा था क्योंकि मैंने घर का काम नहीं किया था। तो मैं अकेला घर से भाग गया। घर से भागकर मैंने ८-१० दिनों तक कुछ भी नहीं खाया था। और रात को सड़क किनारे सोता था। सुबह उठकर मैं जंगल की ओर चला जाता था और जंगल के फल खाकर अपना दिन गुजारा करता

था। एक दिन मैं अपने गांव गया था तो मेरे पापा ने मुझे पकड़ लिया और रस्सी से बांधकर बहुत मारा। फिर हम तीनों भाई घर से भाग गये। घर से भागकर हम टिमरनी के स्टेशन पर रुके और हम एक सप्ताह तक स्टेशन पर ही रहे। उसके बाद हम टेन में बैठकर इटारसी के स्टेशन पर उतरे।

हम तीनों भाई इटारसी में ब्रिज के नीचे रहने लगे। हमारे पास कुछ पैसे थे तो हम उस पैसे से खाना खाते थे। मेरा बड़ा वाला भाई ने होटल में काम करता था। उसे वहां से जो पैसे उसे मिलते थे तो उस पैसे से हम दोनों भाईयों के लिये खाना लेकर आता था। रात को हम ब्रिज के नीचे सोते थे। एक या दो महीने हम ब्रिज के नीचे रहे।

एक दिन हमारे पास एक आदमी आया। उसने हमसे बात की तो हमने उसे सबकुछ बता दिया। वो हमें अपने अपने घर ले गया। थोड़े समय तक हम उसी के पास रहे। फिर उसने हमें जीवोदय में छोड़ दिया। यहां आकर हमें बहुत अच्छा लगा और तीनों भाई यहीं रहने लगे। अभी मेरा बड़ा भाई नौवी कक्षा में, मैं सातवी में और मेरा छोटा भाई छटवीं कक्षा में पढ़ते हैं।

मेरा एक सपना है कि मैं बड़ होकर पायलेट बनना चाहता हूं।

भूरेलाल, कक्षा–सातवीं

जीवोदय–इटारसी

कुछ याद आया

चित्र देखकर कुछ याद आया? हां ये वहीं चित्र है जिसको देखकर तुम्हें बताना था कि इसमें क्या हो रहा है? तुम्हारे एक दोस्त ने इसको देखकर कहानी बनायी है। चलो हम भी पढ़ें उसकी कहानी-

किसी जंगल में दो हाथी रहते थे। वे दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे। एक नाम मंगल और दूसरे का नाम दंगल था। मंगल बहुत सीधा हाथी था लेकिन दंगल बहुत गुस्से वाला हाथी था। एक दिन की बात है, बारिश हो रही थी। दंगल छाता लगाना चाहता था और मंगल बारिश में भीगना चाहता था। दंगल ने मंगल से कहा कि तुम भी छाते के नीचे आ जाओ। लेकिन मंगल को तो बारिश में भीगना था उसने मना कर दिया। ये सुनकर दंगल को गुस्सा आ गया और वो झगड़ने लगा। दोनों के झगड़े में छाता टूट गया।

अब वे दोनों ही भीग रहे थे। वे दोनों बारिश में बहुत भीग गये। अगले दिन दोनों को बुखार आ गया। इसके बाद दोनों को ये बात समझ में आ गयी कि झगड़ा करने से दोनों का नुकसान होता है। एक तो उनका छाता टूट गया और दूसरा नुकसान ये हुआ कि वे दोनों बीमार हो गये। इसके बाद दोनों ने एक-दूसरे से माफी मांगी और वे फिर से दोस्त बन गये।

कहानी कुछ ऐसी बनी

हलचल के पिछले अंक में हमने एक कहानी छापी थी लेकिन वो आधी थी जिसको तुम्हें पूरा करना था। चलो देखते हैं कि वो कहानी क्या थी-

कहानी ऐसी थी

बहुत पुरानी बात है। किसी गांव में एक दादा रहते थे। एक बार वे पास की मंडी में गये और वहां से एक गधा खरीद कर ले आये। उन्होंने गधे को पालपोस कर बड़ा किया। एक बार वे और उनका गधा दोनों कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनको एक नाला पड़ा। गधे ने जैसे ही नाला पार करने के लिये छलांग लगाई वो बीच में से टूट गया। इससे दादा बहुत परेशान हो गये। वे सोचने लगे कि अब मैं क्या करुं ! क्या मैं गधे को यहीं छोड़कर चला जाऊं या फिर इसको जोड़कर फिर से काम के लिये तैयार कर लूं.....!

अब आगे की कहानी

दादा ने सोचा इसे जोड़कर फिर से काम में लगा दूं। उसने गधे को अस्पताल ले गया। डॉक्टर ने बताया कि उसकी हड्डी टूट गयी है। उसका इलाज करनेवाले डॉक्टर ने दादा को दवाई दी और कहा कि दवाई समय से पिलाना। दादा ने गधे को रोज दवाई पिलाई। कुछ दिनों में गधा अच्छा हो गया।

कुछ दिनों बाद गधे का पैर दुखने लगा। उसने दादा से कहा कि मेरा पैर दुख रहा है। मुझे अस्पताल ले चलों। दादा ने कहा कि इस बार तो ले जाउंगा लेकिन अगली बार कुछ भी होगा तो मैं तुमको अस्पताल नहीं ले जाऊंगा। अगली बार जब गधे ने फिर से पैर में दर्द के बारे में कहा तो दादा ने उसे सब्जी मंडभ में वापस छोड़ आये।

शोभा, कक्षा-तीसरी

दो दोस्तों की बातें

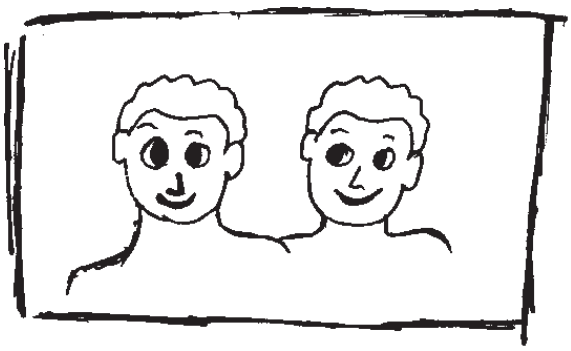

दो दोस्त होते हैं। एक का नाम राजीव और दूसरे का नाम मनीष होता है। वे दोनों आपस में अच्छे मित्र होते हैं। हमेशा ही वे एक-दूसरे की मदद करते हैं।

मगर एक दिन ऐसा आता है कि राजीव की बहन चिंकी उसको छोड़कर भोपाल चली जाती है। वे दोनों बहुत उदास हो जाते हैं और रोने लगते हैं।

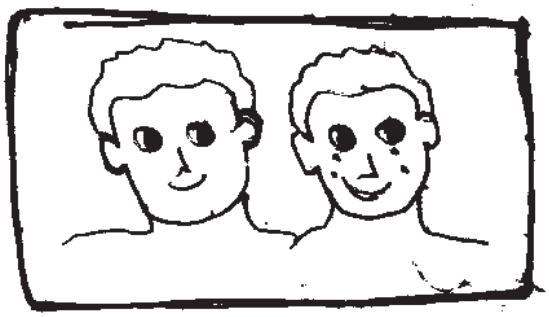

फिर राजीव की एक बात याद आती है कि उसने अपनी बहन चिंकी से वादा किया था कि वह पढ़-लिख कर फौजी बनेगा। ये बात याद करके वो फौजी बनने के लिये तैयारी करने लगता है।

राजीव की तैयारी कामयाब हो गयी और एक बड़ा फौजी ऑफीसर बन गया।

कहानी एवं चित्र :

क्या ये सच है!

दूर किसी गांव में मुन्ना का परिवार रहता था। मुन्ना के परिवार में मां-पिताजी, दादी, तीन छोटी बहनों के अलावा दो छोटे भाई भी थे। भाई-बहनों में मुन्ना सबसे बड़ा था। उसकी उम्र होगी कुछ दस साल।

गांव में मुन्ना के पिता के पास खेती लायक थोड़ी सी जमीन थी। जिसमें पूरा परिवार मिलकर खेती करते थे और खुश रहते थे। खेती ही उनकी आय का एकमात्र जरिया थी। हर साल मुन्ना के पिताजी को बीज खरीदने के लिये साहूकार से कर्ज लेना पड़ता था।

हर साल की तरह इस साल भी मुन्ना के पिताजी को बीज खरीदने के लिये साहूकार से कर्ज लेना पड़ा। खेतों में बोवनी हो गई। मुन्ना का परिवार बहुत सारी उम्मीदें लगाके बैठा था। जैसे ही फसल कटेगी सबसे पहले साहूकार का सारा कर्ज चुका देंगे।

जैसे-जैसे समय बीत रहा था वैसे-वैसे मुन्ना के परिवार की उम्मीदें भी कम होती जा रही थीं। इस साल बारिश कम होने की वजह से फसल सूखने लगी थी। चारों ओर सूखे के कारण फसल बरबाद हो गई। अब मुन्ना के परिवार की चिन्ताएं उनके चेहरों पर साफ देखी जा सकती थी। उधर साहूकार भी अपने कर्ज को वापस लेने के लिये लगातार दवाब बना रहा था। मुन्ना के पिताजी ने साहूकार के पास जो खेत गिरवी रखकर बीज के लिये पैसा लिया था वो तो अब वापस नहीं आने वाला था। साथ ही साहूकार ने उनका घर और जानवर भी ले लिये।

अब मुन्ना का परिवार गरीबी और बदहाली में अपना जीवन बिताने लगा। भुखमरी के कारण मुन्ना की मां की मौत हो गई। कुछ दिनों बाद उसकी एक बहन को बीमारी का इलाज न मिलने के कारण उसकी मौत भी हो गई। इस सबके चलते मुन्ना के पिता भी बीमार रहने लगे।

इन सारी दिक्कतों के चलते एक दिन मुन्ना का परिवार गांव छोड़कर शहर आ गया। यहां पर मजदूरी के काम करने लगे। अब मुन्ना को भी लग रहा था कि अब वो आगे की पढ़ाई पूरी कर सकता है। लेकिन उसके पिता उसे आगे नहीं पढ़ाना चाहते थे। वे उसे रोज काम पर भेज देते थे। अगर मुन्ना मना करता था तो उसकी पिटाई भी होती थी।

गुस्से में आकर एक दिन मुन्ना ने घर छोड़ दिया। और किसी दूसरे शहर में रहने लगा। जब वो घर से निकल रहा था तो उसके पास कुछ पैसा था, कुछ दिनों तक तो उसका गुजारा चलता रहा। जब पैसा खतम हो गया तो उसे चिंता होने लगी।

ऐसे करते-करते कुछ समय बीत गया। एक दिन मुन्ना एक चौराहे पर बैठा था आते-जाते लोग उसे कुछ दे जाते। धीरे-धीरे मुन्ना रोज ऐसे ही भीख मांगने का काम करने लगा। कुछ लोग उसके साथ बुरा व्यवहार भी करते थे। उससे गलत काम भी करवाने लगे। मुन्ना को ये सब अच्छा नहीं लगता था मगर वो कुछ कर भी तो नहीं सकता था

एक दिन मुन्ना जब भीख मांग रहा था तभी उसके पास एक व्यक्ति आया

उसने मुन्ना के बारे में पूछा। उसके परिवार और पढ़ाई-लिखाई के बारे में भी जानने की कोशिश की। फिर उसने मुन्ना को बताया कि हमारे देश में तुम्हारे जैसे बहुत सारे बच्चे हैं जो सड़कों पर भीख मांगते हैं। उनके कोई घर नहीं है वे कही भी सो जाते हैं।

आगे उसने मुन्ना से पूछा कि तुम्हारे जैसे बच्चों के लिये सरकार ने एक कानून बनाया है, क्या तुम उसके बारे में जानते हो? मुन्ना ने कहा कि नहीं, वो इसके बारे में कुछ नहीं जानता है।

उस व्यक्ति ने बताया कि सन् २००० में हमारी सरकार ने तुम्हारे जैसे भीख मांगने वाले और अन्य तरह के उन बच्चें की सुरक्षा के लिए एक कानून बनाया है जो अलग-अलग कारणों से घर से बाहर रह रहे हैं।

मुन्ना ने उससे पूछा कि उस कानून का नाम क्या है? और उस कानून से हमारे जैसे लोगों को किस तरह की मदद मिल सकती है? उस व्यक्ति ने बताया कि उस कानून का नाम किशोर न्याय **(बालकों की देख–रेख और संरक्षण अधिनियम, 2000)** है।

मुन्ना ने कहा, ''मैं इस कानून के बारे में और भी जानना चाहता हूं। क्या आप मुझे बतायेंगे?''

उस व्यक्ति ने कहा, ''हां जरुर। लेकिन आज नहीं आज मुझे जल्दी घर पहुंचना हैं। लेकिन मैं कल तुमसे फिर मिलूंगा। तब इसके बार में और भी बातें करेंगें।''

.....हमारे काम के बारे में

स्पांक :

स्पांक में ऐसे बच्चे शामिल हैं जिनके परिवार नहीं हैं या जिनके परिवारों से संपर्क नहीं हुआ है या जो घर नहीं जाना चाहते। ऐसे सारे बच्चों के लिये स्पांक एक पुर्नवास स्थल है यहां बच्चे रहते हें उनकी रोज की जरुरतें पूरी की जाती हैं और उन्हें स्कूल भी भेजा जाता है।

चिराग :

जीवोदय का ये प्रोजेक्ट किशोरियों के पुर्नवास के लिये एक आश्रय स्थल है। यहां रहने वाली लड़कियां विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ स्कूल भी जाती हैं। यहां पर लगभग 15–20 लड़कियां रहतीं हैं।

जागृति :

जबलपुर में स्थित जागृति परियोजना में आश्रय एवं पुर्नवास केन्द्र के माध्यम से 25 बच्चे पर लगभग 15–20 लड़कियां रहतीं हैं। नियमित शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

आज वे बच्चे जो अपने जीवन से निराश हो चुके थे, हंसते-खिलखिलाते हुए बहुत सारी उम्मीदों के साथ दिखाई देते हैं।

हलचल पत्रिका भी इन बच्चों को अपनी बात रखने के लिये एक मंच का काम करेगी। साथ ही हमारा आपसे संवाद का माध्यम भी बनेगी।

इसी उम्मीद के साथ

सिस्टर क्लारा
जीवोदय
जनता टॉकीज के सामने
नेहरुगंज-इटारसी
फोन : 07572–236191

चलो-चलो

बारिश में दूर-दूर तक उड़ेंगे

कितना मजा आयेगा, है न?

क्या तुम सब भी हमारे साथ चलोगे?